निवेदन

ऋषि-मुनियो का परिधेय वल्कल, राम और सीता के पुण्य ारित्र के साथ, अमर हो गया है। इसी नाते हम क्यों न आशा करे कि हमारा यह 'वल्कल' भी लोकरुचि के अनुकूल होगा।

बीकानेर — सकसेना

दीपावली, १९९८

महर्षियों की वाणी का यह मधु
उन्हींके चरणों में
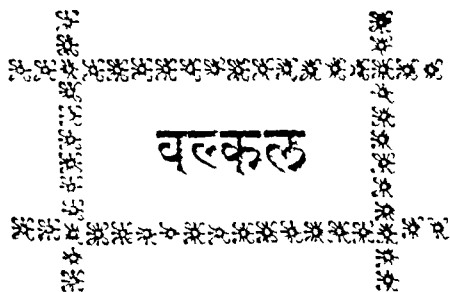
वल्कल

पहला दृश्य

अयोध्या का राजभवन

रात

दशरथ धीरे-धीरे महल में प्रवेश करते हैं

दशरथ

आज आकाश दिवाली मना रहा है। धरती पर भी दिवाली है। राम के राजतिलक मे सबका सहयोग है।— किन्तु राज-प्रासाद का यह भाग अँधेरा क्यो पड़ा है ? (और आगे बढ़कर) अरे, कोई है ?

[दासी का प्रवेश]

दासी

इधर से, महाराज इधर से।

दशरथ

लगता है सारी दुनियाँ का अंधकार यहाँ आकर जमा हो गया है।

दासी

इधर से महाराज।

दशरथ

यह कैसा उल्टा प्रबंध है ?

दासी

(हाथ जोड़े खड़ी रहती है।)

कैकेयी

सारे राज्य के लिए कहा होगा।

दशरथ

पर देखता हूँ कि—

कैकेयी

महाराज देखना चाहते हैं कि अन्तःपुर भी राजाज्ञा से शासित क्यों नहीं होता ?

दशरथ

(हसते और रानी कैकेयी के मुह की ओर देखते है।)

कैकेयी

यह राजाज्ञा की अवहेला नहीं है, महाराज।

दशरथ

(हसते हुए) राजाज्ञा न सही अन्तःपुर की अधीश्वरी की आज्ञा सही।— पर यह आज्ञा किसलिए ?

कैकेयी

यह बताने के लिए कैकेयी बाध्य नहीं। यह कोई छोटी-मोटी नहीं। यह कोई धर्षिता-अपहृता नहीं। यह राजनंदिनी है, राजरानी है, और है— और है राज—

दशरथ

प्रिये अरे! तुम कुपित हो रही हो ?

कैकेयी

महाराज जो चाहें कह सकते हैं।

कैकेयी

यह पुरुषों का शिष्टाचार मात्र है। इसमें कुछ सार होता तो महाराज की ओर से अकारण आज्ञा वापस लेने का आदेश न होता। कहो, राजरानी कुछ नहीं। उसका आदेश कुछ नहीं। राजाज्ञा ही सर्वोपरि है। अन्त पुर में भी आज से राजाज्ञा चलेगी। कहो, कहो, कहते क्यों नहीं महाराज?

दशरथ

बहुत हो चुका, प्रिये! जो सदा तुम्हारी इच्छा का दास है उसे ऐसा दोष तो न दो। अन्त पुर की कहती हो लो मैं तुम्हें लिखकर देता हूँ। आज से राज्य भर में राजरानी कैकेयी की आज्ञा ही राजाज्ञा समझी जायगी। लो, इस पर अपने हाथ से राजमुद्रा अंकित करो।— परन्तु, यह आज्ञा वापस लेने का अनुरोध 'अकारण' मत कहो। (हाथ आगे बढ़ाते हैं।)

कैकेयी

मुझे महाराज पर विश्वास नहीं।

दशरथ

क्या कहा? विश्वास नहीं। सूर्यवंशी राजा दशरथ के वचन पर विश्वास नहीं? राजरानी कैकेयी को अपने स्वामी पर विश्वास नहीं?— मेरे कान क्या सुन रहे हैं, रानी?

कैकेयी

मै सच कहती हूँ।

दशरथ

(आकाश की ओर मुह करके) सुनो, आकाशचारी नक्षत्रो! सुनो। रानी कैकेयी क्या कहती हैं? सुनो, निशानाथ! तुम भी

सुनो। रघुवंश की यह रानी यह क्या कहती है ?

कैकेयी

कैकेयी कभी प्रलाप नहीं करती, महाराज। आप स्वयं ...जित होते हैं।

दशरथ

और रानी! दशरथ भी किसी के प्रति अविश्वस्त नहीं।

कैकेयी

कैसे कहूँ ?

दशरथ

देवताओं से पूछो। मनुष्यों से पूछो। उन अनार्य राक्ष... से पूछ देखो।— इनके अतिरिक्त जिससे इच्छा हो पूछ लो...

कैकेयी

अपने को छोड़कर और दुनियाँ से पूछने की मुझे जरूरत नहीं।

दशरथ

शांतम् पापं, शांतम् पापं। क्या कहती हो प्रिये ? रघुवंशी दशरथ अपनी स्त्री के प्रति अविश्वस्त! (कानों पर हाथ रखते हैं)

कैकेयी

सोच देखिये राजन्!

दशरथ

(मलिन और विचारमग्न हो जाते हैं।)

कैकेयी

कुछ याद आ रहा है ?

दशरथ

कहा, कुछ भी तो नहीं।

कैकेयी

बड़े आदमी बड़ी-बड़ी बातों को कहकर आसानी से भुला सकते हैं। इसीमे तो उनकी बड़ाई है।

दशरथ

मैं आज आनन्द मे पागल हो रहा हूँ। मुझे कुछ सुध नहीं है। तुम्हीं याद दिलाओ न एक बार, प्रिये!

कैकेयी

यही होगा। यही होगा, महाराज। मैं ही याद दिलाऊँगी।

दशरथ

हां-हां, तब मैं भी बताऊँगा कि प्यारी! तुम्हारा अविश्वास व्यर्थ है।

कैकेयी

ऐसा हुआ तो मुझे असीम हर्ष होगा, स्वामी!

दशरथ

तो कह डालो।

कैकेयी

एक नहीं दो-दो वरदानों का वचन देकर आपको इस तरह मुकर जाना क्या शोभा देता है?

दशरथ

ओहो! याद आया। याद आया। प्यारी, मैं तुम्हारा ऋणी हूँ।

आज कैसे सुन्दर मुहूर्त मे तुमने उस घटना की याद दिला

कैकयी

तो क्या पुरस्कार मे केवल धन्यवाद पाकर रह जाना है

दशरथ

इस पुण्य मुहूर्त मे मैं कण-कण के लिए ऋण-मुक्त हो
चाहता हूँ। तुम्हारी दूरदर्शिता की किस मुख से प्रशंसा कर
प्रिये ! तुमने कैसा मंगलमय समय चुना है !— तुम आज
की जगह चार वरदान मॉग लो।

कैकयी

(मुस्कराती है।)

दशरथ

हँसा नहीं, प्रिये ! आज सचमुच मुँह-माँगे चार वरद
माँग लो। राम के अभिषेकोत्सव के समय मुझे किसी को कु
भी अदेय नही है।— फिर तुम तो—

कैकेयी

रहने दो। आपको कष्ट होगा।

दशरथ

बिलकुल नहीं। तुम मांग लो। मनमाना मॉग लो।

कैकेयी

मै जो कहती हूँ।

दशरथ

और मैं भी तो कहता हूँ। तुम मॉग लो प्राणप्रिये, मेरा भ
अनुरोध मानो। इतनी खुशी का समय जीवन मे अब और
कौन-सा आयेगा ?— मॉगती क्यो नही, तुम्हे राम की शपथ
है मॉग लो।

कैकेयी

महाराज की यही इच्छा है तो—तो मैं माँगती हूँ कि अभिषेक मेरे भरत का हो।— और, और राम चौदह वर्ष तक वल्कल पहन कर बनवास करे।

दशरथ

ऐ ऐ ! क्या कहा ? क्या कहा ? रानी ! कैकयी ! प्रिये !

(जीभ लड़खड़ाती है)

कैकेयी

बस।

दशरथ

भरत की माँ, इतना कटु-कठोर परिहास मैं तुम्हारे मुँह से सुन रहा हूँ ?

(गला सूखता है।)

कैकेयी

यह परिहास नहीं है राजन्, सत्य है।

दशरथ

सत्य है। कौन कहता है ?

कैकेयी

अभागे राजकुमार की दुखिया माता कहती है।

दशरथ

भरत की माता, जरा मेरे मुँह की ओर देखकर

फिर एक बार कहो तो जानूं ।— नहीं तुम कभी न कह सकोगी ।

कैकेयी

मैं तो कह चुकी । मैं बार बार क्यों कहूँगी ?

दशरथ

तो मैं मान लूं कि यह परिहास नहीं है ?

कैकेयी

महाराज इसे परिहास कहकर उड़ा दे सकते हैं, पर कैकेयी ऐसे समय हँसी नहीं करती ।

दशरथ

परिहास कहकर उड़ा दूँ, और नहीं तो क्या करूँगा ये क्या वरदान हैं ? नारी ! ओह निर्मम नारी !

कैकेयी

मैं भी चाहती हूँ महाराज परिहास कहकर मेरी बातें उड़ा दें । तब आप अपने धवल यश का झंडा इतना ऊँचा कभी न उड़ा सकेंगे । मैं हवा के साथ दिगन्त मे आपकी इस दानवीरता के गीत गुँजा दूँगी । मैं वन की डाली-डाली पर आपकी प्रशस्तियाँ लिख कर छोड़ जाऊँगी । मैं पशु-पक्षियो तक आपकी यह यश-गाथा पहुँचा दूँगी । बिजली की तूलिका से बादलों पर आपकी सत्यवादिता का यह चित्र अंकित कर दूँगी ।

दशरथ

कैकेयी ! तुम पिशाचिनी हो ?

कैकेयी

राजकुमार होकर भी मेरा भरत जब पथ का भिखारी है तो राजरानी होकर मेरे पिशाचिनी होने में क्या शेष है ? परन्तु महाराज आप भी अब यह झूठा आडंबर रख न सकेंगे। आपके कपट-प्रेम की आज परीक्षा हो जायगी।

दशरथ

भरत की माँ ! आज तुम्हे हो क्या गया है ?

कैकेयी

महाराज निश्चिन्त रहें। मैं सब तरह शान्त और स्वस्थ हूँ। मैं आपसे सिर्फ दो टूक उत्तर चाहती हूँ 'हाँ या ना।' केवल 'हाँ या ना ?'

दशरथ

हाँ या ना ?

कैकेयी

'हाँ' का मतलब है आपके सारे आयोजन का धूल में मिल जाना, रानी कौशिल्या की आशाओं के मंदिर का ढह जाना और प्राणाधिक राम का विछोह। 'ना' से सब झंझट दूर होते हैं। केवल आपके यश में एक धब्बा लग जायगा। सो क्या चाँद मे कलंक नहीं होता ?

दशरथ

कैकेयी !

कैकेयी

आपके 'ना' कह देने से मैं अबला क्या कर सकूँगी? मेरा भरत भी क्या करेगा?

दशरथ

भरत की माँ, तुम चाहे जो कुछ करो पर मेरे भरत को इसमें मत सानो। वह भोला, राम का भक्त—

कैकेयी

बस, बस महाराज! रहने दीजिये। मैं जानती हूँ आप भरत को क्या समझते हैं। तभी न उसे ननसाल में डाल रक्खा है। राम के राज्याभिषेक के समय भी आप जिसे घर बुलाना जरूरी नहीं समझते उस भरत को आप कितना चाहते हैं, यह किसी से छिपा नहीं है।

दशरथ

भगवान् जानते हैं। (ऊँची सास लेते है)

कैकेयी

भगवान् तो जानते ही हैं। आज मैं भी वही जानना चाहती हूँ।

दशरथ

(आह भर कर) मुझे निश्चय हो रहा है कि तुम अवश्य आओगी।

कैकेयी

इस अवसर को मैं जाने नहीं दे सकती महाराज।

दशरथ

वही दिखता है। रघुवंश का विशाल वृत्त तुम्हारी आँधी मे न जाने कहाँ जाकर रहेगा?

कैकेयी

कुछ चिन्ता नहीं। मैं केवल उत्तर चाहती हूँ। मुझे इस समय और कुछ नहीं दिखता है।

दशरथ

हा! राम! (धीरे धीरे बैठ जाते हैं।)

कैकेयी

इतने व्याकुल होने की कौन बात है? आप इन्कार कर दें। बस। पर यह नहीं हो सकता महाराज! कि आप अपने वचन से फिर भी जायें और सत्यवादी भी कहलायें।

दशरथ

रानी! तुम समझती हो राम को राज्य का मोह है? छिः तो तुम उसे नहीं जानती। यदि उसे मालूम हो जाय तो वह ऐसे सैकड़ो राज्य छोड़कर चला जाय। यदि तुम जरा पहले कहतीं तो मैं यह सब करता ही क्यों? फिर भी तुम्हारी यही इच्छा हो तो मैं भरत का अभिषेक कर दूंगा। परन्तु–परन्तु दूसरी बात, ओह! दूसरी बात कितनी कठोर है! क्या अपने प्यारे राम के लिए वनवास का प्रस्ताव

दशरथ

कैकेयी !

कैकेयी

आपके 'ना' कह देने से मैं अबला क्या कर सकूँगी? मेरा भरत भी क्या करेगा?

दशरथ

भरत की माँ, तुम चाहे जो कुछ कहो पर मेरे भरत को इसमें मत सानो। वह भोला, राम का भक्त—

कैकेयी

बस, बस महाराज! रुकने दीजिये। मैं जानती हूँ आप भरत को क्या समझते हैं। तभी न उसे ननसाल में डाल रक्खा है। राम के राज्याभिषेक के समय भी आप जिसे घर बुलाना जरूरी नहीं समझते उस भरत को आप कितना चाहते हैं, यह किसी से छिपा नहीं है।

दशरथ

भगवान् जानते हैं। (ऊँची सांस लेते हैं)

कैकेयी

भगवान् तो जानते ही हैं। आज मैं भी वही जानना चाहती हूँ।

दशरथ

(आह भर कर) मुझे निश्चय हो रहा है कि तुम अवश्य [illegible]।

कैकेयी

इस अवसर को मैं जाने नहीं दे सकती महाराज।

दशरथ

वही दिखता है। रघुवंश का विशाल वृक्ष तुम्हारी आँधी मे न जाने कहाँ जाकर रहेगा?

कैकेयी

कुछ चिन्ता नहीं। मैं केवल उत्तर चाहती हूँ। मुझे इस समय और कुछ नहीं दिखता है।

दशरथ

हा! राम! (धीरे धीरे बैठ जाते हैं।)

कैकेयी

इतने व्याकुल होने की कौन बात है? आप इन्कार कर दे। बस। पर यह नहीं हो सकता महाराज! कि आप अपने वचन से फिर भी जायें और सत्यवादी भी कहलायें।

दशरथ

रानी! तुम समझती हो राम को राज्य का मोह है? छिः तो तुम उसे नहीं जानती। यदि उसे मालूम हो जाय तो वह ऐसे सैकड़ो राज्य छोड़कर चला जाय। यदि तुम जरा पहले कहतीं तो मैं यह सब करता ही क्यो? फिर भी तुम्हारी यही इच्छा हो तो मैं भरत का अभिषेक कर दूंगा। परन्तु–परन्तु दूसरी बात, ओह! दूसरी बात कितनी कठोर है! क्या अपने प्यारे राम के लिए वनवास का प्रस्ताव

मैं यह स्वाँग देखना नहीं चाहती।

दशरथ

रानी ! बबूल बोकर आमों की आशा करना मेरे लिए व्यर्थ है। आज मैं यह समझ रहा हूँ।

कैकेयी

समझ रहे हैं परन्तु मोह नहीं छोड़ सकते।

दशरथ

रानी ! तुम मेरे प्राण चाहती हो. वे मिलेंगे। परन्तु मेरे सामने से हट जाओ। मैं तुम्हारा मुँह देखना नहीं चाहता। हा, राम ! (गिर पड़ते हैं, आँखें मूँद लेते हैं।)

दूसरा दृश्य

अयोध्या का राजमहल

प्रात.काल

(दशरथ मूर्छित पड़े हैं। एक तरफ कैकेयी बैठी है। राम, सुमन्त्र और वशिष्ठ एक एक कर आते हैं।)

राम

पिताजी ! पिताजी !

दशरथ

(आँखें खोलकर राम को देख लेते हैं, फिर बंद कर लेते हैं।)

कैकेयी

(सिर हिलाकर इनकार करती है ।)

राम

एक बार भी नहीं ? अच्छा मैं अभी बुलाता हूँ ।

कैकेयी

(सिर हिला कर मना करती है ।)

राम

न बुलाऊँ ?

कैकेयी

(धीरे से) नहीं ।

राम

क्यों माँ ?— मै देख रहा हूं पिताजी को बहुत कष्ट है । वैद्य के बिना—

कैकेयी

(राम को हाथ से रोकती है, और बैठ जाने का इशारा करती है ।)

राम

(बैठ जाते है । कैकेयी से कुछ सुनना चाहते है ।)

कैकेयी

भैया राम, महाराज को कोई रोग नहीं है ।

दशरथ

(गहरी निश्वास के साथ आह भरते हैं।)

राम

पिताजी ! पिताजी !— मैं आपका राम आपके पास खड़ा हूँ ।

कैकेयी

देखो, राम !

राम

आज्ञा करो माँ !

कैकेयी

मैं आज्ञा कुछ नहीं करती । मैं तुम्हे बता देना चाहती हूँ कि महाराज तुम्हें मुँह से कुछ नहीं कहा चाहते हैं । उनका तुम पर अगाध स्नेह है । परन्तु—

राम

कहो, माँ । कहो ।

कैकेयी

महाराज ने मुझे दो वरदान देने कहे थे । मैंने आज जो जी मे आया माँग लिया । इसी पर महाराज दुखी हैं । वे नहीं चाहते तुम्हारे बजाय भरत को राजगद्दी मिले ! न वे तुम्हारे बनवास की आज्ञा दे सकते हैं, चौदह वर्ष का बनवास !

कैकेयी

परन्तु पिता का स्नेह है भैया !

राम

स्नेह नहीं मोह है माँ ! तुम मेरा हिताहित समझ कर पिताजी को समझा दो न ।

कैकेयी

मेरी बात महाराज को इस समय जहर मालूम होती है । इसलिए तुम्हीं समझाओ । जो वंश अपनी सत्यवादिता के लिए विख्यात है, उसके यश में यह धब्बा क्या अच्छा लगेगा ? सब कहेंगे रघुवंश के महाराज दशरथ दो वरदानों के लिए अपने वचन से फिर गये । रघुवंश के लिए यह कितने कुयश की बात होगी !

राम

नहीं, यह कैसे हो सकता है माँ ?

कैकेयी

तुम सब लायक हो राम । तुम समझाओ ! महाराज तुम्हारी बात मान लेंगे ।

राम

(सुमन्त और वशिष्ठ की ओर देखते हैं । वे सिर झुकाए चुपचाप बैठे हैं ।)

गुरुदेव पिताजी को सचेत करिये ।

वशिष्ठ

([illegible] महाराज !

दशरथ

राम, बेटा ! तुम क्या कहते हो ? मै कभी तुम्हे आँखो से ओट न होने दूँगा । मै वचन भंग का अयश ले लूँगा। सत्य-प्रतिज्ञ की प्रतिष्ठा छोड़ दूँगा, परन्तु तुमसे विलग न हो सकूँगा । इस दुष्टा, पापिनी के कुचक्र को कभी सफल न होने दूँगा ।

राम

पिताजी, आप तो पुण्यात्मा है । मैं आपको क्या समझाऊँ ? पर इतना तो कहूँगा कि आप मुझे पुत्र का धर्म पालन करने से न रोकिये ! आपने जो शिक्षा मुझे बचपन से दी है, उसे आज मेरे आचरण मे झलकने दीजिये ।— समय थोड़ा है, और मुझे आज ही प्रस्थान करना है ।

[झुककर राजा के चरण छूकर चले जाते है ।]

दशरथ

राम ! राम !– चला गया !— बुलाओ सुमन्त ! जरा मेरे राम को बुला लो। (वशिष्ठजी [ओर मुड़कर) गुरुदेव ! तुम्हीं राम को थोड़ा समझाओ ।— हा ! राम !

[पलँग पर गिर जाते हैं सुमन्त हाथ का सहारा देते हैं]

वशिष्ठ

(दुखित होकर) ओफ, कितना दारुण है ! (रानी कैकेयी से) रानी, तुम क्या करने जा रही हो ? क्या तुम्हें इसका

भरत को भी नहीं जानती। वशिष्ठ का वचन कभी मिथ्या नहीं होता!

कैकेयी

गुरुदेव क्षमा चाहती हूँ!

वशिष्ठ

मेरी ओर से तुम्हे कोई बाधा नही है। रघुवंश के उज्ज्वल इतिहास मे यह काला पृष्ठ भी जुड़े बिना न रहेगा, यही सोच है।

[प्रस्थान

दशरथ

(आँखें खोलकर सुमन्त से) सुमन्त, मालूम पड़ता है गुरुदेव राम को समझाने गये हैं। देखो, तुम अभी भरत को ले आने के लिए शीघ्रगामी रथों पर दूत भेज दो। अभिषेक की सारी सामग्री तैयार रक्खो। आते ही भरत का तिलक कर देना होगा।

सुमन्त

जो आज्ञा महाराज!

दशरथ

परन्तु सुमन्त देखना, कहीं राम वन जाने का हठ न करें। तुम उन्हे रोक देना।—कह देना, महाराज की आज्ञा नहीं है! उन्होंने मना किया है।

भरत को भी नहीं जानती। वशिष्ठ का वचन कभी मिथ्या नहीं होता !

कैकेयी

गुरुदेव क्षमा चाहती हूँ !

वशिष्ठ

मेरी ओर से तुम्हे कोई वाधा नही है। रघुवंश के उज्ज्वल इतिहास मे यह काला पृष्ठ भी जुड़े विना न रहेगा, यही सोच है।

[प्रस्थान

दशरथ

(आखें खोलकर सुमन्त से) सुमन्त, मालूम पड़ता है गुरुदेव राम को समझाने गये हैं। देखो, तुम अभी भरत को ले आने के लिए शीघ्रगामी रथो पर दूत भेज दो। अभिषेक की सारी सामग्री तैयार रक्खो। आते ही भरत का तिलक कर देना होगा।

सुमन्त

जो आज्ञा महाराज !

दशरथ

परन्तु सुमन्त देखना, कहीं राम वन जाने का हठ न करें। तुम उन्हे रोक देना।—कह देना, महाराज की आज्ञा नहीं है। उन्होंने मना किया है।

भरत को भी नहीं जानतीं । वशिष्ठ का वचन कभी मिथ्या नही होता !

कैकेयी

गुरुदेव क्षमा चाहती हूँ !

वशिष्ठ

मेरी ओर से तुम्हे कोई बाधा नहीं है । रघुवंश के उज्ज्वल इतिहास मे यह काला पृष्ठ भी जुड़े बिना न रहेगा, यही सोच है ।

[प्रस्थान

दशरथ

(आँखें खोलकर सुमन्त से) सुमन्त, मालूम पड़ता है गुरुदेव राम को समझाने गये हैं । देखो, तुम अभी भरत को ले आने के लिए शीघ्रगामी रथों पर दूत भेज दो । अभिषेक की सारी सामग्री तैयार रक्खो। आते ही भरत का तिलक कर देना होगा।

सुमन्त

जो आज्ञा महाराज ।

दशरथ

परन्तु सुमन्त देखना, कहीं राम वन जाने का हठ न करें । तुम उन्हे रोक देना ।—कह देना, महाराज की आज्ञा नहीं है ! उन्होंने मना किया है ।

सुमन्त

रानी ऐसा न कहो ।

दशरथ

सुमन्त, जल्दी जाओ । देखो देर न हो ।

सुमन्त

जो आज्ञा राजन् ।

[सुमन्त का प्रस्थान

तीसरा दृश्य

अयोध्या का राजमहल

(राजा दशरथ उसी प्रकार पड़े हैं। कैकेयी एक तरफ बैठी है । उसकी दृष्टि द्वार की ओर है। शायद किसी की प्रतीक्षा में है। भीतर से दासी मंथरा धीरे धीरे आती है। कैकेयी मुँह घुमाकर उसकी ओर देखते ही उँगली के इशारे से उसे पास बुलाती है।)

मंथरा

(पास जाकर) आज्ञा महारानी !

कैकेयी

(धीरे से) कौशल्या के यहाँ क्या हो रहा है ?

मंथरा

सुकेशी को भेजा है ! आती ही होगी ।

कैकेयी

अच्छा, जाओ ।

सुमन्त

रानी ऐसा न कहो ।

दशरथ

सुमन्त, जल्दी जाओ । देखो देर न हो ।

सुमन्त

जो आज्ञा राजन् ।

[सुमन्त का प्रस्थान

तीसरा दृश्य

अयोध्या का राजमहल

(राजा दशरथ उसी प्रकार पड़े है । कैकेयी एक तरफ बैठी है । उसकी दृष्टि द्वार की ओर है। शायद किसी की प्रतीक्षा में है । भीतर से दासी मथरा धीरे धीरे आती है । कैकेयी मुँह घुमाकर उसकी ओर देखते ही उँगली के इशारे से उसे पास बुलाती है ।)

मंथरा

(पास जाकर) आज्ञा महारानी !

कैकेयी

(धीरे से) कौशल्या के यहाँ क्या हो रहा है ?

मथरा

सुकेशी को भेजा है ! आती ही होगी ।

कैकेयी

अच्छा, जाओ ।

कैकेयी

परन्तु सीता और लक्ष्मण के लिए वस्त्र कहाँ हैं? देखो, जाकर अभी तैयार कराओ ।

मंथरा

सब कुछ तैयार है, महारानी!

कैकेयी

तैयार है। शाबाश मंथरा तू देखने में जैसी भोंडी है काम में वैसी ही निपुण है।

मंथरा

आप एक बार देख लेतीं।

कैकेयी

देख लिया है। देख लिया है। तेरे प्रबंध पर मुझे संतोष है।

[राजा दशरथ करवट बदलकर गहरी निश्वास लेते हैं, और 'राम हा' राम ' कहते हैं]

मंथरा

स्वामिनी, एक बार चलकर देख लेतीं।

कैकेयी

चल ।

[एक ओर से दोनों जाती हैं। दूसरी ओर से राम, लक्ष्मण और सीता प्रवेश करते हैं।]

कैकेयी

परन्तु सीता और लक्ष्मण के लिए वस्त्र कहाँ हैं ? देखो , जाकर अभी तैयार कराओ ।

मंथरा

सब कुछ तैयार है, महारानी !

कैकेयी

तैयार है। शाबाश , मंथरा तू देखने मे जैसी भोंडी है काम मे वैसी ही निपुण है।

मंथरा

आप एक बार देख लेतीं।

कैकेयी

देख लिया है। देख लिया है। तेरे प्रबंध पर मुझे संतोष है।

[राजा दशरथ करवट बदलकर गहरी निश्वास लेते हैं, और 'राम, हा ! राम ' कहते हैं]

मंथरा

स्वामिनी, एक बार चलकर देख लेतीं।

कैकेयी

चल।

[एक ओर से दोनों जाते हैं। दूसरी ओर से राम, लक्ष्मण और सीता प्रवेश करते हैं।]

दशरथ

राम बेटा, मुझे सुख नहीं चाहिए, धर्म भी नहीं चाहिए अगर वह तुम्हारे बिना प्राप्त होता हो ।

राम

पिताजी मुझे लग रहा है कि आज आप मेरे मोह मे आकर कर्तव्य को भुला रहे हैं । धर्म ही जिसके जीवन का आधार रहा है वह कभी मुँह से निकले हुए वचनो के लिए स्वप्न मे भी क्या ऐसा कहेगा ? आप जरा सोचिये, आपके इस विचार से महान रघुकुल की प्रतिष्ठा क्या अप्रतिहत रह सकेगी ?

दशरथ

किसका वचन ? कैसा वचन ? भोले, राम ! मैंने ऐसा कोई वचन नहीं दिया । क्या कोई अपने प्राण को निकालकर फेंक सकता है ? यह सब तुम्हारी विमाता का षड्यन्त्र है. उसकी राक्षसी चाल है ।

राम

यह नहीं पिताजी ! आपके मुँह से जो एक बार निकल गया सो निकल गया । मेरे लिए वह परिपालनीय होगया । आपका आज्ञाकारी राम आपके आदेश को आकाशवाणी की तरह पवित्र समझता है ।

दशरथ

बेटा । राम ! क्या कहा ? मैं समझ नहीं सका । आज मेरे कान बहरे हो रहे हैं । मेरी आँखें अंधी हो गई हैं । मुझे न कुछ दिखता है न सुनाई देता है ।

राम

माँ, पिताजी ने तो कह दिया। अब मेरा कर्तव्य शेष है। सो मै तैयार हूँ। आप मुझे आशीर्वाद दीजिये। आप का स्नेह वनवास के समय मेरा सहायक हो।

कैकेयी

(मुँह नीचे झुक जाता है। चेहरा म्लान हो जाता है। उस भाव को छिपाने का नाट्य करती हुई) बेटा, तुम जुग-जुग जियो। तुम रघुवंश का मुख उज्ज्वल करोगे।

राम

तो माँ, आज्ञा दो। मेरे पीछे यह मैथिली खड़ी है। यह भी आपका आशीर्वाद चाहती है।

कैकेयी

वधू, जानकी! तुम्हे तो जाने की आवश्यकता नहीं। तुम यहाँ रह सकती हो।

सीता

(झुककर प्रणाम करती है।)

राम

माँ, और भैया लक्ष्मण का भी प्रणाम स्वीकार करो।

कैकेयी

अरे, यह क्या? तुम सब तो अयोध्या सूनी कर देना चाहते हो? मै तो कठिन कर्त्तव्य वश ऐसा कर रही हूँ। मेरा यह मतलब तो नहीं था।

दशरथ

(गरज कर) अरी पापिष्ठा ! ठहर, यह क्या करती है ? वनवास राम का हुआ है या सीता का भी ? अब क्या तू सब को वल्कल पहनाएगी ?

कैकेयी

(रुक जाती है और राजा के मुँह की ओर देखने लगती है ।)

सीता

पिताजी, स्वामी से बढ़कर वस्त्र पहनने की आप मुझे आज्ञा देते है ?

दशरथ

(शान्त होकर सिर झुका लेते है।)

सीता

(कैकेयी के हाथ से वल्कल लेकर भीतर चली जाती है।)

लक्ष्मण

(आगे आकर वल्कल लेते और पहनते हैं।)

दशरथ

ओफ ! [तकिया पर गिर पड़ते हैं। आँसुओं की धार से तकिया भीगने लगता है।

नट

लक्ष्मण	राम के छोटे भाई
राम	पिता की आज्ञानुसार वनवासी हुए अयोध्या के युवराज
सीता	राम की स्त्री
शूर्पणखा	अनार्यवंश के राजा रावण की बहिन

सीता

ओहो, और उधर तो देखो पर्वतशिखर से लिपटती और कलकल करती हुई यह जलधारा कहाँ जा रही है ? मैं सोचती थी यह कौन गरज रहा है ?

लक्ष्मण

और भाभी, तुमने इधर नहीं देखा ।

[लक्ष्मण कुंज के नीचे नाचते
हुए मोरों को दिखाते हैं ।]

सीता

सचमुच, कैसा सुन्दर है !

राम

देवी गोदावरी की ऐसी ही महिमा है ।

सीता

यहाँ आये विलंब नहीं हुआ । पल भर में ही मार्ग की सारी थकावट जाती रही । खेलने-कूदने के लिए अंग अंग उछल रहा है ।

राम

चलो, उठो पहले सब लोग आचमन करें । भाई लक्ष्मण आओ चलें ।

[सब धीरे-धीरे जलधारा
की ओर बढ़ते हैं ।]

सीता

ओहो, और उधर तो देखो पर्वतशिखर से लिपटती और कलकल करती हुई यह जलधारा कहाँ जा रही है ? मैं सोचती थी यह कौन गरज रहा है ?

लक्ष्मण

और भाभी, तुमने इधर नहीं देखा ।

[सघन कुंज के नीचे नाचते हुए मोरों को दिखाते हैं ।]

सीता

सचमुच, कैसा सुन्दर है !

राम

देवी गोदावरी की ऐसी ही महिमा है ।

सीता

यहाँ आये विलंब नहीं हुआ । पल भर में ही मार्ग की सारी थकावट जाती रही । खेलने-कूदने के लिए अंग अंग उछल रहा है ।

राम

चलो, उठो पहले सब लोग आचमन करें । भाई लक्ष्मण आओ चलें ।

[सब धीरे-धीरे जलप्रपात की ओर बढ़ते हैं ।

सीता

भगवती, अपने स्वामी और देवर के साथ मै जिस दिन सकुशल घर लौटूंगी, आपकी इस महिमा को सदा याद करूंगी।

[किनारे पर चढ़कर राम और लछमन का पत्तियाँ इकट्ठी करना देखती है।]

राम

क्यो डर तो नहीं लगता है ?

सीता

डर क्यो लगेगा ? इच्छा होती है मै भी आकर काम मे हाथ बटाऊँ।

लछमन

नहीं भाभी। यह न होगा। यह तुम्हारा काम नहीं है।

राम

ठीक तो है। तुम अपना काम करो। दोने मे वे जो कंदमूल-फल रक्खे हैं। उनको धो लाओ। हम लोग अभी आते हैं।

सीता

अच्छी बात है। आगे से मैं अपने काम मे किसी को शामिल न करूँगी। अपनी फुलवाड़ी अपने हाथ से सींचूँगी। अपनी खेती अपने आप निराऊँगी। अपने पशु-पक्षियों को स्वयं खिलाऊँ-पिलाऊँगी।

दूसरा दृश्य

पंचवटी

रात

राम, लक्ष्मण और सीता बैठे हैं। पूर्व आकाश में पूर्ण चन्द्रमा उदय हुआ है, जिसकी किरणें सघन छाया में से छनछनकर जहाँ-तहाँ रुपहला प्रकाश बिछा रही है।

राम

भगवान शंकर ने स्वयं विष पीकर अमृत देवताओं को दे दिया था, उसी प्रकार मझली माँ ने सारे संसार का कलंक सिर पर थोप कर भी हम लोगो को कैसा सुन्दर सुयोग दिया है !

सीता

आर्यपुत्र को वल्कल पहने देखकर जब मैं साथ आने का हठ कर रही थी तो कल्पना मे भी यह जीवन क्या कभी आया था ?

लक्ष्मण

और मुझे तो क्रोध आ रहा था ! इस कुशासन और इस पर्णकुटी का मूल्य अब समझ मे आ रहा है। इसके सामने राज-सिंहासन क्या है ?

राम

मेरे तो रोम-रोम से मेझली माँ के लिए धन्यवाद निकलता

सीता

देवर, रात भर जागने की आवश्यकता नहीं। यह पवित्र स्थान है। यहाँ किसी प्रकार का भय नहीं है।

राम

हाँ, भैया लक्ष्मण ! जाओ, सो रहो।

[प्रणाम करके लक्ष्मण का प्रस्थान]

सीता

देवर रात भर पलक भी नहीं लगाते।

राम

सच पूछो तो वनवास मुझे नहीं भैया लक्ष्मण को ही हुआ है। कैसी कठोर साधना है !

सीता

बहिन उर्मिला के भाग्य में यही बदा था !

राम

वधू उर्मिला के यश से ही चन्द्रमा आकाश में चमकता है। उसके तप से ही धरती सधी है। वह पृथ्वी पर देवी है। उसके ही पुण्य-प्रताप से भैया लक्ष्मण की यह तपस्या सफल हो रही है।

सीता

आकाश में बादल उठते हैं, धूप के स्थान पर छाया आती है, प्रकाश मलिन पड़ जाता है, फूल मुरझा जा
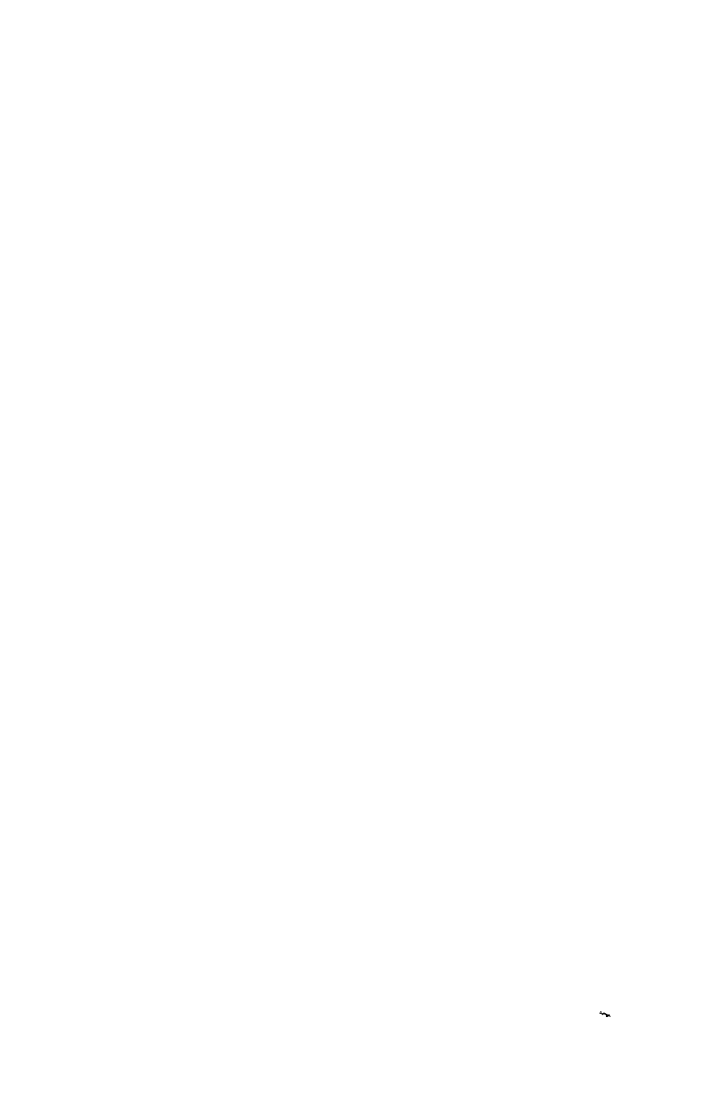
श्रीगणेश है । यह साधना ही तो संसार में उन्हें अमर करेगी ।

सीता

आर्यपुत्र के वचन सत्य हों ।

राम

शीतल हवा चलने लगी । अब तुम भी चलो शयन करो ।

सीता

चलो ।

[छोटीसी पत्तों की कुटिया में प्रवेश करते हैं ।

तीसरा दृश्य

पचवटी

आधीरात

पर्णकुटी के द्वार पर धनुष-बाण लिए लक्ष्मण पहरा दे रहे हैं । आकाश से चन्द्रमा झाँक रहा है । चन्द्रमा की किरणों से उनका मुख दिव्याभा-मण्डित दिखाई पड़ता है । हवा चल रही है । पेड़ों के साथ छाया भी हिल रही है । कभी छाया और कभी प्रकाश में आजाने से रूप नया नया दिखाई पड़ता है ।

लक्ष्मण

वही मुख, वही आँखे, वही बोल, वही लज्जा, वही

शूर्पणखा

तुम्हारी तपस्या आज सफल हुई ?

लक्ष्मण

पर तुम कौन हो देवी ?

शूर्पणखा

तुम्हारी तपस्या की प्राप्ति । तुम्हारी साधना की सिद्धि !

लक्ष्मण

छिः नारी ! यह क्या कहती हो ?

शूर्पणखा

पूछते हो, क्या कहती हूँ ? अरे ! निर्दय, तुम्हारे मुँह से ये शब्द क्योंकर निकले ? इस चाँदनी रात मे, इस एकान्त कानन में, इस मलय पुलकित वातावरण मे, तुम एक सुन्दरी का स्वागत इन शब्दो से करते हो ? क्या तुम पुरुष नहीं हो ? क्या वसन्त के स्पर्श को तुमने कभी नहीं जाना ? क्या प्रेम की उच्छ्‌वास से तुम्हारा हृदय कभी सुरभित नहीं हुआ ?

लक्ष्मण

तुम नहीं जानतीं देवि !

शूर्पणखा

मै सब जानती हूँ । भौरे की आहट से कलियों को खिलते मैंने देखा है । जूही के मुँह पर किरणो के प्यार चुंबन को मैंने अनुभव किया है ।

लक्ष्मण

बस करो, मै सुनना नहीं चाहता।

शूर्पणखा

न सुनने से क्या होगा ? प्यारे ! रोम-रोम से यह तुम्हारे मन में प्रवेश करेगी। जो प्रकृत है, जो स्वाभाविक है, उसे कौन रोक सकता है ? इस चांदनी रात मे, इस स्वर्गीय वेला मे, इस निभृत एकांत मे, हृदय को संयम की रस्सी से बाँधना पाप है। वह पाप मैं तुमसे होने न दूंगी।

लक्ष्मण

इस कुतर्क को अपने ही पास रक्खो। इसे सुनने से भी पाप लगता है।

शूर्पणखा

प्रेम से यदि पाप लगता हो तो ऐसे पाप को भी वरदान मान कर स्वीकार करो। देखो, कायर मत बनो। एक नारी को, एक कोमल हृदय को, मत ठुकराओ।— प्रकृति पुकार रही है, चलो गलबहियाँ देकर चाँदनी के स्नानागार मे हम तुम दोनो नहायें और जीवन को सार्थक करें। शरीर और यौवन फिर किसलिए हैं?— प्यारे! सुदर्शन ! उठो, आओ।

(हाथ पकड़ना चाहती है।)

लक्ष्मण

खबरदार !

शूर्पणखा

(एक पग पीछे हटकर) अरे ! क्या तुम पुरुष नहीं

सीता

क्यों नहीं। (लक्ष्मण से) देवर, क्यों क्या विचार किया? बोलते क्यों नहीं? सोच-विचार में क्या पड़े हो? (मुस्कराती है)

लक्ष्मण

(हंसकर) भाभी, आप जानती हैं मैं तो दास हूँ। (शूर्पणखा की ओर इशारा करके) ये तो रानी होने लायक हैं। इन्हे तो किसी राजा को वरण करना चाहिए।

शूर्पणखा

मैं तुम्हे ही राजा बना दूंगी—इस जनस्थान का एक मात्र स्वामी।

सीता

अब तो स्वीकार है?

लक्ष्मण

राज मुझे नही चाहिए। राज्य मेरे भाग्य मे नहीं बदा है, भाभी।

सीता

तब भद्रे! तुम इनसे आशा छोड़ो।

शूर्पणखा

परन्तु मैंने तो निश्चय कर लिया है कि मैं आप लोगों के साथ ही रहूँगी! यदि देवरानी नहीं बन सकती तो सौत बना कर ही मुझे अपने साथ रख लो, देवि!

लक्ष्मण

(मुस्कराकर) यह उचित प्रस्ताव है।

सीता

क्यों नहीं। (लक्ष्मण से) देवर, क्यों क्या विचार किया? बोलते क्यों नहीं? सोच-विचार में क्या पड़े हो? (मुस्कराती हैं)

लक्ष्मण

(हसकर) भाभी, आप जानती हैं मैं तो दास हूँ। (शूर्पणखा की ओर इशारा करके) ये तो रानी होने लायक हैं। इन्हें तो किसी राजा को वरण करना चाहिए।

शूर्पणखा

मैं तुम्हें ही राजा बना दूंगी—इस जनस्थान का एक मात्र स्वामी।

सीता

अब तो स्वीकार है?

लक्ष्मण

राज मुझे नहीं चाहिए। राज्य मेरे भाग्य में नहीं बदा है, भाभी।

सीता

तब भद्रे! तुम इनसे आशा छोड़ो।

शूर्पणखा

परन्तु मैंने तो निश्चय कर लिया है कि मैं आप लोगों के साथ ही रहूँगी। यदि देवरानी नहीं बन सकती तो सौत बना कर ही मुझे अपने साथ रख लो, देवि!

लक्ष्मण

(मुस्कराकर) यह उचित प्रस्ताव है।

सीता

क्यों नहीं। (लक्ष्मण से) देवर, क्यों क्या विचार किया? बोलते क्यों नहीं? सोच-विचार में क्या पड़े हो? (मुस्कराती है)

लक्ष्मण

(हंसकर) भाभी, आप जानती हैं मैं तो दास हूँ। (शूर्पणखा की ओर इशारा करके) ये तो रानी होने लायक हैं। इन्हें तो किसी राजा को वरण करना चाहिए।

शूर्पणखा

मैं तुम्हें ही राजा बना दूंगी—इस जनस्थान का एक मात्र स्वामी।

सीता

अब तो स्वीकार है?

लक्ष्मण

राज मुझे नहीं चाहिए। राज्य मेरे भाग्य में नहीं बदा है, भाभी।

सीता

सच भद्रे! तुम इनसे आशा छोड़ो।

शूर्पणखा

परन्तु मैंने तो निश्चय कर लिया है कि मैं आप लोगों के साथ ही रहूँगी! यदि देवरानी नहीं बन सकूंगी तो [illegible] [illegible] पर ही मुझे अपने साथ रख लो, देवि!

लक्ष्मण

(मुस्कराकर) यह उचित प्रस्ताव है।

आतिथ्य

पहला दृश्य

मतंग ऋषि का आश्रम

प्रभात

वेद-मंत्रों के साथ अग्निहोत्र हो रहा है। यज्ञ-धूम धीरे धीरे उठकर आकाश को छा रहा है। पास की एक कुटिया का द्वार खुलता है। तपस्विनी शबरी निकलती है। शरीर वृद्ध है। मुख तेजस्वी है। हाथ में एक बेत की टोकरी लिए है। इधर उधर काम में लगी हुई ऋषि-पत्नियां खड़ी हो जाती हैं। शबरी जिधर से निकल जाती है। वहीं कोई न कोई उसे प्रणाम करता है। वह असीस देती है। ऋषि-कुमार सोम सामने आकर हाथ जोड़कर कहता है।

सोम

देवी, शबरी को ऋषिकुमार सोम प्रणाम करता है।

शबरी

ऋषिकुमार को शीघ्र ज्ञान प्राप्त हो।

सोम

देवि, आपका शरीर बहुत दुर्बल होगया है।

शबरी

ऋषिकुमार, शरीर का तो यही धर्म है।

सोम

फल-फूल एकत्र करने में आपकी सहायता कर दूं?

पहला दृश्य

मतंग ऋषि का आश्रम

प्रभात

वेद-मंत्रों के साथ अग्निहोत्र हो रहा है। यज्ञ-धूम धीरे धीरे उठकर आकाश को छा रहा है। पास की एक कुटिया का द्वार खुलता है। तपस्विनी शबरी निकलती है। शरीर वृद्ध है। मुख तेजस्वी है। हाथ में एक बेंत की टोकरी लिए है। इधर उधर काम में लगी हुई ऋषि-पत्नियाँ खड़ी हो जाती हैं। शबरी जिधर से निकल जाती है। वहीं कोई न कोई उसे प्रणाम करता है। वह असीस देती है। ऋषि-कुमार सोम सामने आकर हाथ जोड़कर कहता है।

सोम

देवी, शबरी को ऋषिकुमार सोम प्रणाम करता है।

शबरी

ऋषिकुमार को शीघ्र ज्ञान प्राप्त हो।

सोम

देवि, आपका शरीर बहुत दुर्बल होगया है।

शबरी

ऋषिकुमार, शरीर का तो यही धर्म है।

सोम

फल-फूल एकत्र करने में आपकी सहायता कर दूं?

राजा महाराजा, ऋषि-मुनियों का मेला लगा रहता था। मुझे याद है उन दिनों का अग्निहोत्र जिसके धुएँ से सारा वन महकता था और वह सामगान जिससे सारा आकाश गूँजता था! आह!

सोम

(आश्चर्य नाट्य) देवि, महर्षि तब कहाँ विराजते थे? क्या ये कुटियाँ इसी प्रकार थीं?

शबरी

नहीं। तब से सब कुछ बदल गया है। महर्षि मतंग की कुटिया के स्थान पर यज्ञ-कुंड बन गया है। वह शाल्मलीवृक्ष जो महर्षि की कुटिया पर छाया किये रहता था आज कहाँ है? आँधी ने उसे कब का उखाड़ दिया है। तमसा की लहरें कुटिया के पीछे कलकल करती थीं वे भी अब कितनी दूर चली गई हैं?

सोम

देवि, आपको तो सब कुछ याद है।

शबरी

क्या भूल सकती हूँ?

सोम

हाँ, कैसे भूल सकती हो?

शबरी

मेरी आँखों के आगे अभी भी महर्षि मतंग मृगाजिन पर बैठे हैं। लंबी श्वेत दाढ़ी में उनका तेजपुंज मुख

जितने चाहो फल फूल पा सकती हो। ये देखो, वृक्ष और लताएँ कैसे लदे हैं।

शबरी

मैं तो यहाँ तक कभी न पहुँचती। सोमकुमार की सहायता के लिए कृतज्ञ हूँ।

सोम

इसमें कृतज्ञ होने की कौन-सी बात है देवि!

[शबरी फल-फूल चुनती है। सोमकुमार बीच बीच में सहायता देता है।

दृश्य परिवर्तन

दूसरा दृश्य

वनपथ

प्रभात

राम लक्ष्मण चले आ रहे हैं। [illegible]

राम

लक्ष्मण, कैसा सुहावना वन है!

लक्ष्मण

मालूम पड़ता है यहाँ सरोवर कुछ दूर नहीं है।

हिरन भी तो भाग रहे है, केवल हिरनियाँ उन्हे यह समझाती-सी लगती है कि मृगो ! डरो नहीं। ये तुम्हे न मारेगे। ये तो सोने का मृग खोजने आये है । (निश्वास)

लक्ष्मण

देखिये महाराज, इधर देखिये । ये वृक्ष और लताएँ पत्र-पुष्प हिलाहिला कर आपका स्वागत करते हैं । यह शीतल सुगन्धित पवन आपके मार्ग को बुहारता चलता है ।

राम

मुझे तो विश्वास नहीं होता भाई ! जानकी के बिना सारी सृष्टि मुझे तो रूठी सी दिखती है । भला, अभागे राम का कौन बुलायेगा ?

लक्ष्मण

मेरा तो जी कहता है कि यही स्थान हमे भाभी का सधान बतायेगा । जटायु ने भी ऐसा ही कहा था ।

राम

भैया ! जटायु एक महात्मा था । उसकी सद्भावना ही तो मुझे चलने का बल दे रही है । नहीं तो प्रिया जानकी के बिना क्या मैं इस वन में एक कदम भी चल सकता ? यहाँ पशु-पक्षी सब मेरा उपहास करते प्रतीत होते हैं । वियोगियों के लिए यह वन नहीं है । चलो, यहाँ से निकल चलें ।

([illegible])

[illegible]

महाराज ! आपका [illegible] रहा है । [illegible]

राम

भैया लक्ष्मण ! मुझसे तो चला नहीं जाता । यहाँ का तो प्रत्येक दृश्य मुझे सीता की याद दिलाता है ।

लक्ष्मण

ये शुभ लक्षण हैं महाराज ।

राम

तो पूछो न इन लताओं से, किसी ने मिथिलेशकुमारी को देखा है ।

लक्ष्मण

धैर्य रखिये महाराज, भाभी का पता अवश्य लगेगा ।

राम

भैया, धैर्य रखने से ही तो मैं जी रहा हूँ ! धैर्य न रखता तो क्या जीवित होता ? सीता को खोकर भी धैर्य के बिना क्या राम कभी जी सकता है ?

लक्ष्मण

तो चलिये, महाराज ।

राम

(लक्ष्मण का सहारा लेकर चलते हैं और [illegible] देखकर कहते हैं ।)

हे मृगियो, क्या तुमने मृगनयनी सीता को भी देखा है ? जरा मुझे बतलाती जाओ ।—हाय-हाय ! तुम्हीं बतलाओ क्या [illegible] देखी मेरी और अपने देवर लक्ष्मण का नाम [illegible]

शबरी

नहीं महाराज, मैं तो आपको लिए बिना न जाऊँगी। पधारिये।

राम

(लक्ष्मण की ओर देखकर) अच्छी बात है, चलो।

शबरी

यह सीधा मार्ग है महाराज !

[मार्ग दिखाती है। राम
लक्ष्मण पीछे-पीछे चलते हैं।

दृश्य परिवर्तन

तीसरा दृश्य

शबरी की कुटिया में एक मृग-चर्म पर राम-लक्ष्मण बैठे हैं। सामने पत्तों के दोनों में कुछ फल रखे हैं। एक दोने में गंगाजल रखा है। शबरी भी पास ही भूमि पर बैठी है। राम-लक्ष्मण पर पंखा ताड़पत्र झल रही है।

शबरी

महाराज, किस संकोच में पड़े हैं ?

राम

नहीं देवि, संकोच कैसा ? इतनी [illegible] के रहते संकोच ठहर सकता है ?

शबरी

तो लीजिये, महाराज ! [एक बेर उठाकर राम को देती है, राम खाते हैं।]

राम

बड़े स्वादिष्ट हैं। बड़े मीठे हैं, भैया लक्ष्मण !

(लक्ष्मण भी लेकर खाते हैं)

लक्ष्मण

हाँ, बहुत मीठे हैं।

राम

(और लेकर खाते हैं) देवि. ! तुम्हारी भक्ति ने इन फलों में अमृत घोल दिया है। ऐसे मीठे फल तो मैंने जीवन में कभी नहीं खाये हैं।

शबरी

महाराज, मैं बनवासिनी किस लायक हूँ ? यदि आप कुछ दिन इस कुटी को पवित्र करें तो इनसे भी बढ़कर मीठे-मीठे फल खिलाऊँ।

राम

देवि, तुम्हारा सत्कार देखकर तो जी होता है कि मैं जन्मान्तर तक यहीं रहूँ।

शबरी

अहोभाग्य मेरा, प्रभो।

राम

परन्तु देवि, तुम्हें पता नहीं हम बड़े संकट में हैं। यहीं वन में मेरी प्रिया मैथिली का हरण हुआ है। हम उसी की खोज में वन-वन पर्वत-पर्वत खोज रहे हैं। आराम और विश्राम की बात तब तक हमारे ध्यान में नहीं आ सकती, जब तक हम उसे नहीं पा लेते।

शबरी

क्षमा करियेगा प्रभो, ऐसे समय भी मैंने आपको रोक लिया।

राम

देवि, ऐसा मत कहो। इस दुःख के समय मेरा सत्कार करके तुमने मुझे प्रिया सीता की खोज के लिए नवजीवन दिया है।

शबरी

महानुभाव, मैं तो [illegible] हूँ।

राम

मुझे एक ही दुःख है देवि, कि मैथिली के साथ मैं इस आश्रम के दर्शन का सौभाग्य न पा सका।

[illegible]

[illegible]

राम

परन्तु देवि, तुम्हें पता नहीं हम बड़े संकट में हैं। यहीं वन में मेरी प्रिया मैथिली का हरण हुआ है । हम उसी की खोज में वन-वन पर्वत-पर्वत खोज रहे हैं । आराम और विश्राम की बात तब तक हमारे ध्यान में नहीं आ सकती, जब तक हम उसे नहीं पा लेते ।

शबरी

क्षमा करियेगा प्रभो, ऐसे समय भी मैंने आपको रोक लिया ।

राम

देवि, ऐसा मत कहो । इस दुःख के समय मेरा सत्कार करके तुमने मुझे प्रिया सीता की खोज के लिए नवजीवन दिया है ।

शबरी

महानुभाव, मैं तो असहाय अबला हूँ ।

राम

मुझे एक ही दुःख है देवि, कि मैथिली मेरे साथ में इस आश्रम के दर्शन का सौभाग्य न पा सकी ।

लक्ष्मण

सचमुच ही देवि, यदि आज हमारी भाभी होतीं तो इस आश्रम की जिन वस्तुओं को हम लोगों ने दो दिन [illegible] में देखा है, उन्हें देखने में दो [illegible]

है। अवस्था ने उसे जर्जर बना डाला है। उसे और किसी प्रकार की चिंता में मत डालो। हम आ सके तो आ ही जायेंगे।

शबरी

जैसी आपकी इच्छा।

राम

आज तुम्हारी भक्ति से मेरा रोम-रोम प्रसन्न है। ऋषि-मुनियों में भी ऐसी भावना दुर्लभ है। देवि, अब हमें आज्ञा दो तुम्हारी इस अनुपम भक्ति की याद करते-करते हम चले जायें। प्रिया सीता की स्मृति मुझे आगे खींच रही है।

शबरी

महाराज, भगवती सीता की खोज में मेरा यह शरीर किसी काम आ सके तो मुझे भी अपने साथ ले लीजिये।

राम

बस, देवि! मैं कृतज्ञ हूँ।

[राम, लक्ष्मण उठ खड़े होते हैं, शबरी चरणों पर गिरकर प्रणाम करती और आँखों से आँसू बहाती है। राम-लक्ष्मण चले जाते हैं।

शबरी

चले गये। पावन पथिक चले गये। राम-लक्ष्मण चले गये। हमारी दण्डक की शोभा को अपने साथ लिए ही गये। राजकुमार चले गये। महर्षि मतंग का वचन आज पूरा

हो गई है। मैं भी बाहर-भीतर से जैसे रिक्त हो गई हूँ।—देखो, ऋषिकुमार ! देखो। मालूम पड़ता है इस शरीर के प्राण भी उन्हीं के साथ चले गये। आह !

[मूर्छित होती है, सोम कुमार संभालते हैं।

सोम

शबरी, शबरी ! देवि ! अरे यह क्या, तुम्हारी आँखें क्यों पथरा रही हैं ?

[शबरी कोई उत्तर नहीं देती है।

परदा

नट

राम	अयोध्या के महाराज
लक्ष्मण	राम के छोटे भाई
वशिष्ठ	राम के कुलगुरु
उर्मिला	लक्ष्मण की स्त्री
मांडवी	भरत की स्त्री

पहला दृश्य

अयोध्या का राजमहल

सायंकाल

राम अकेले बैठे सोच रहे हैं

राम

राम आज महाराज हैं—अयोध्या के महाराज। अश्वमेध यज्ञ अब करना ही होगा। दिग्विजय करके रघुवंश के गौरव को बढ़ाना ही होगा। गुरु वशिष्ठ का आदेश है। मंत्री सुमन्त की राय है। प्रजाजनों की इच्छा है। परन्तु—परन्तु क्या अब राम राम नहीं हैं, अयोध्या के महाराज ही हैं ?

[लक्ष्मण का प्रवेश

लक्ष्मण

जय हो महाराज की। गुरु वशिष्ठ का आदेश है।

राम

गुरु वशिष्ठ का आदेश सिरमाथे। जाओ; कह दो।

लक्ष्मण

जो आज्ञा, महाराज।

[प्रस्थान

राम

महाराज, महाराज । फिर वही महाराज । आज राम की कोई चर्चा ही नहीं करता । राम का अब अस्तित्व ही कहाँ रहा, जो कोई इनकी चर्चा करे ? (ठण्डी साँस लेते हैं।)

[लक्ष्मण का प्रवेश

लक्ष्मण

महाराज, गुरु वशिष्ठ के आदेशानुसार तीर्थजल लाने को आदमी भेज दिये हैं ।

राम

बहुत अच्छा किया ।

लक्ष्मण

और —

राम

हाँ-हाँ, सुन लिया । बहुत अच्छा किया ।

लक्ष्मण

वृद्ध सुमन्त नगर को सजाने में लग गये हैं ।

राम

उन्हें मेरी ओर से धन्यवाद दे देना । इतनी अवस्था में इतना उत्साह !

लक्ष्मण

भैया भरत शत्रुघ्न और माताएँ भी—

राम

महाराज, महाराज । फिर वही महाराज । आज राम की कोई चर्चा ही नहीं करता । राम का अब अस्तित्व ही कहाँ रहा, जो कोई उनकी चर्चा करे ? (ठंडी साँस लेते हैं ।)

[लक्ष्मण का प्रवेश

लक्ष्मण

महाराज, गुरु वशिष्ठ के आदेशानुसार तीर्थजल लाने को आदमी भेज दिये हैं ।

राम

बहुत अच्छा किया ।

लक्ष्मण

और —

राम

हाँ हाँ, सुन लिया । बहुत अच्छा किया ।

लक्ष्मण

एक कुम्हार नगर को बुलाने भेजे गये हैं ।

राम

उसे मेरी ओर से भी मदद दे देना । इसकी अवस्था में इतना [illegible]

लक्ष्मण

जैसा आप चाहेंगे और [illegible] हो—

लक्ष्मण

यज्ञ की दीक्षा के संबंध मे मंत्रणा —

राम

मंत्रणा ?—मंत्रणा अभी शेष है ?

लक्ष्मण

गुरु वशिष्ठ—

राम

तो अभी यह सब गुरु वशिष्ठ की मंत्रणा से नहीं हो रहा था ?

लक्ष्मण

परन्तु —

राम

मै समझ गया । मेरे लिए गुरु वशिष्ठ का आदेश है कि मैं यज्ञ की दीक्षा ग्रहण करूँ ।—नहीं-नहीं, दीक्षा ग्रहण करने से पहले उनसे मंत्रणा कर लूँ । यही न ?

लक्ष्मण

हाँ ।

राम

अच्छी बात है । कह दो, मैं स्वयं सेवा मे उपस्थित होता हूँ

लक्ष्मण

जो आज्ञा ।

यश मुझे जानकी से भी अधिक प्रिय था वह सब मिल गया। दुनियाँ मेरे नाम का जय-जयकार करती है, पर मेरा हृदय आज मुझे धिक्कारता है। मेरी आत्मा मुझे शाप देती है। मेरा रोम-रोम मुझे पापी कहता है। यह मेरा कैसा भाग्य है!

[लक्ष्मण का प्रवेश

लक्ष्मण

महाराज मिथिला से दूत लौट आया।

राम

ठीक हुआ। निमंत्रण अस्वीकार हो गया! राम, यश के भूखे, गौरव के अंधे राम का निमंत्रण!—हो-हो! (हँसते हैं।)

लक्ष्मण

नहीं महाराज जनक आरहे हैं।

राम

आ रहे हैं महाराज जनक, क्या कहते हो लक्ष्मण?— वे दुरात्मा राम के सब अपराधों को भूलकर आ रहे हैं? आ रहे हैं, उसी अयोध्या में जिसे जानकी से भी अधिक अपना यश-गौरव प्यारा है?

लक्ष्मण

वे महाराज को कोप का पात्र नहीं समझते!—उनका प्यार तो आपके प्रति और बढ़ गया है।—वे आ रहे हैं

युद्ध प्रतापी रघुवंश की नाक रखने के लिए ही लड़ा गया था । सीता के लिए लड़ा जाता तो अग्नि-परीक्षा का अपमान उस देवी के भाग्य मे न आता । उस समय भी मैं अशान्त न हुआ । इसी मुख से मैंने उसे आग में प्रवेश करने की आज्ञा दी ! ओफ !

लक्ष्मण

शान्त हो महाराज !—इसीलिए मर्यादा पुरुषोत्तम के नाम से आप जगद्विख्यात हैं ।

राम

यह कोई गुण नहीं । यह मेरी कायरता है लक्ष्मण ! मैं हृदय से जिसे सदा समझता रहा उसे ही लोकनिन्दा के डर से ग्रहण न कर सका । दुनिया इसे गुण कह कर जब मेरे नाम के साथ जोड़ती है तो वह मेरी कायरता पर व्यंग करती है ।

लक्ष्मण

दुनियाँ महाराज के त्याग की पूजा करती है ।

राम

त्याग—सीता का त्याग ! भला इस त्याग के लिए दुनिया राम के गुण गाती है !— तब तो मैं बड़ा भारी त्यागी हूँ ।
([illegible])

[illegible]

[illegible]

माण्डवी

यह तो नहीं कह सकते।

उर्मिला

यही तो है। नहीं तो; नहीं तो—

[लक्ष्मण का प्रवेश

लक्ष्मण

क्या हो रहा है ?

माण्डवी

देवर, आज जल्दी आ गये। महाराज क्या सोने चले गये ?

लक्ष्मण

नहीं तो।

माण्डवी

तो ?

लक्ष्मण

महाराज गुरु वशिष्ठ के साथ मन्त्रणागृह में हैं। मैं जा रहा हूँ, सिर्फ यह कहने के लिए आया था कि शायद मैं देर से आ सकूँ ?

माण्डवी

क्यों ?

लक्ष्मण

महाराज का जी कुछ ठीक नहीं है।

माण्डवी

जी ठीक नहीं है और मन्त्रणागृह में हैं, यह कैसी

माण्डवी

यह तो नहीं कह सकते ।

उर्मिला

यही तो है । नहीं तो; नहीं तो—

[लक्ष्मण का प्रवेश

लक्ष्मण

क्या हो रहा है ?

मांडवी

देवर, आज जल्दी आ गये । महाराज क्या सोने चले गये ?

लक्ष्मण

नहीं तो ।

मांडवी

तो ?

लक्ष्मण

महाराज गुरु वशिष्ट के साथ मंत्रणागृह में है । मैं जा रहा हूँ सिर्फ यह कहने के लिए आया था कि शायद मैं देर मे आ सकूं ?

मांडवी

क्यों ?

लक्ष्मण

महाराज का जी कुछ ठीक नहीं है ।

मांडवी

जी ठीक नहीं है और मंत्रणागृह में हैं. पर पै

माण्डवी

पर वो नहीं कह सकते ।

उर्मिला

यही तो है । नहीं तो, नहीं तो—

[लक्ष्मण का प्रवेश

लक्ष्मण

क्या हो रहा है ?

माण्डवी

देवर, आज जल्दी आ गये । महाराज क्या सोने चले गये ?

लक्ष्मण

नहीं तो ।

माण्डवी

तो ?

लक्ष्मण

महाराज गुरु वशिष्ठ के साथ मंत्रणागृह में हैं । मैं आ रहा हूं सिर्फ यह कहने के लिए आया था कि शायद मैं देर में आ सकूं ।

माण्डवी

क्यों ?

लक्ष्मण

महाराज का जी कुछ ठीक नहीं है ।

माण्डवी

जी ठीक नहीं है और मंत्रणागृह में हैं, यह कैसी बात ?

में न पड़कर महाराज स्वयं कुछ करें तो वह कभी इतना दुखदायक न हो। वृद्ध वशिष्ठ के पास मस्तिष्क है हृदय नहीं, तर्क है प्रेम नहीं, न्याय है दया नहीं। उनकी हृदय हीन व्यवस्था मनुष्य का कोई उपकार नहीं कर सकती।

माण्डवी

ऐसा हो तो दुनियाँ वशिष्ठ को क्यों माने ?

उर्मिला

ऐसा ही है। ऐसी ही है।—आज भी तो मन्त्रणा हो रही है। अयोध्या के राजवंश के भाग्य में न जाने क्या लिखा है ? [चिन्ता]

माण्डवी

भगवान्, रक्षा करेंगे। (सब जाती हैं।)

सीता

मैं महाराज से निवेदन करूँगी कि मन्त्रणा पर न रहें। [illegible]

[illegible]

राम

आपकी कृपा से ।

वशिष्ठ

परन्तु एक बात तो मैं भूल ही गया था ।

राम

कोई हानि नहीं । अब आज्ञा कीजिये ।

वशिष्ठ

शास्त्र का आदेश है कि यज्ञ करने वाला सपत्नीक रह कर दीक्षा ले । बिना स्त्री के यज्ञ निष्फल होता है ।

राम

तब तो यह अनर्थ हुआ । (सोच में पड़ जाते हैं ।)

वशिष्ठ

तो इसका उपाय शीघ्र करना होगा ।

राम

इसका क्या उपाय हो सकता है भगवन् !

वशिष्ठ

दूसरा विवाह कर लो ।

राम

दूसरा विवाह !

वशिष्ठ

हाँ, बिना सहधर्मिणी के यज्ञ नहीं हो सकेगा ।

राम

क्या कहते हो गुरुदेव !

वशिष्ठ

तो यज्ञ कैसे होगा ?

राम

न हो यज्ञ । राम को पुण्य नहीं चाहिए, धर्म नहीं चाहिए, स्वर्ग भी नहीं चाहिए ।

वशिष्ठ

परन्तु राम का यज्ञ राम के कल्याण के लिए नहीं है ।

राम

तो किसके लिए है ?

वशिष्ठ

प्रजा के लिए । याद रहे राम राम नहीं हैं राजा हैं । यज्ञ प्रजा के कल्याण के लिए हो रहा है । यज्ञ रुक नहीं सकता ।

राम

परन्तु पत्नीहीन राम निरुपाय है । प्रजा के लिए शरीर है, ये प्राण हैं । राम का रोम-रोम प्रजा के लिए है, परन्तु गुरुदेव मैं आपके चरण छूता हूँ, इस विषय में और मुझसे कुछ मत कहिए । मेरे हृदय में भयानक ज्वाला जल रही है ।

वशिष्ठ

जरा सी बात के लिए मोहान्ध न हो राजन !

वशिष्ठ

ठहरो रामचन्द्र ! भैया, इतने उत्तेजित मत हो । देखो इसका परिणाम क्या होगा ? संसार कहेगा अयोध्या के राजा रामचंद्र ने अपने सुख के लिए प्रजा के मंगल की चिन्ता नहीं की । प्रजारंजन के लिए जिसने अपनी सती-साध्वी सीता जैसी नारी को त्याग दिया, वही राम आज प्रजा के मंगल का विचार छोड़ दे यह कैसी बात है ।

राम

और यह कैसी बात है, जो मैं वयोवृद्ध गुरु वशिष्ट के मुँह से उसी सीता के लिए सती-साध्वी विशेषण सुन रहा हूँ जिसे असती का कलंक देकर घर से निकाल बाहर करने की व्यवस्था एक दिन आपने दी थी ।

वशिष्ठ

अन्याय मत करो राजन् ! मैंने पतिव्रता सीता को असती कभी नहीं कहा ।

राम

तो आपने इसी आदर के साथ ये विशेषण उसी दिन काम में क्यों नहीं लिए थे ? राम से आपका पूर्वजन्म का कौन सा विरोध था महर्षि ?

वशिष्ठ

बस करो राम ! तुम्हारे कुल-गुरु वशिष्ठ का अनुरोध समझो तो, आदेश समझो तो यही कि [illegible]